प्रभू विश्व का धनी मेरा

—श्रीमती प्रेम, जालन्धर

वाणी में चौपाई आती है "प्रभू विश्व का धनी मेरा" स्वामी श्री प्राणनाथ जी ने वाणी में ही इसका निर्णय कर दिया है कि पूर्णब्रह्म परमात्मा किसके क्या हैं। लेकिन अभी तक हमारा प्रणामी समाज यह नहीं जानता कि हमें उन्हें पति कहना चाहिए या प्रभू या महाप्रभू। बहुत बार बहुत से महानुभावों से चर्चा सुनने का अवसर मिलता है जब वो महाप्रभु स्वामी प्राणनाथ जी कहते हैं तो बड़ा ही खेद होता है उस बुद्धि पर जो अपने स्वामी के लिये स्वामी शब्द न कहकर अपना दावा ही खत्म कर लेते हैं।

सारी दुनियां के तो वे महाप्रभू ही हैं लेकिन धाम की रूहों के प्रभू नहीं, उनके तो धनी हैं। प्रभू की पूजा की जाती है। धनी की पूजा नहीं की जाती उसे तो रिझाया जाता है।

एक छोटा सा उदाहरण—एक आदमी बड़ी मिल का मालिक है। उसकी मिल में बहुत से लोग काम करते हैं औरतें, मर्द, बच्चे, बूढ़े इत्यादि। सभी उसे मालिक कहकर पुकारते हैं। एक बार वह मिल में कारीगरों का काम देख रहा था। एक लड़की उसके मन को भा गई। घर जाकर अपने पिता जी से बात की और उसे अपनी पत्नी बनाकर घर ले आया। अब वह उसे क्या समझेगी? वह जिस मिल में एक छोटी सी नौकरी करती थी उसी मिल के मालिक की पत्नी बन गई है। सारी मिल वाले कारीगर उसे अपनी मालकिन समझने लगे क्योंकि उसने शादी सभी के सामने की थी। कुछ समय बीता। मिल मालिक ने मिल वालों को कम्बल बांटने थे, सभी एक एक करके कम्बल ले जाने लगे। एकाएक मिल मालिक घबरा गया, क्योंकि उसकी पत्नी भी कम्बल लेने वालों की पंक्ति में खड़ी थी। क्या वह मिल मालिक उसे कम्बल देगा? भले वह अपनी पत्नी को अपनी जिन्दगी से दूर कर सकता है लेकिन धाम धनी अपनी रूहों को कभी दूर नहीं कर सकते। सब कुछ देख रहे हैं, जिन्होंने धाम का दावा भी ले रखा है और कम्बल रूपी दान भी मांग रहे हैं। उनका हाल क्या होगा जब धाम में वो पिया के सम्मुख होंगे।

Nijanand App

जिन्होंने धाम का दावा नहीं लिया, तारतम नहीं लिया वो तो प्रणामी नहीं हैं। सारी दुनियां प्रणामी नहीं है। उनके तो महाप्रभू हैं। लेकिन जिन्होंने धाम धनी के सम्मुख होकर "बिनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की ओवधार" कहा है वह तो अपने वायदे को न भूलें। भारतीय नारी भी जिसे एक बार पति मान लेती है उसे सारी उम्र के लिए मानती है।

आत्म का रिश्ता जो धाम में था हमारी निसबत थी तभी तो हमें इस मोह सागर में पिया की वाणी मिली है। तारतम मिला, धाम का दावा मिला, फिरसे हम उन्हें पिया न कहकर प्रभू कह देते हैं बहुत बड़ी गलती करते हैं। जिन साथियों ने कुछ ढूंढ़ कर खोज करके पिया को पाया इसकी कीमत जानते हैं। शायद वो फिर कभी प्रभू नहीं कहने वाले। क्योंकि जो प्यार पिया से है वो प्यार प्रभू से हो नहीं सकता। पिया तो रूहों के साथ हैं। चोपाई भी है "मैं रह न सकूँ रूहों बिन, रूहें रह न सकें मुझ बिन" और प्रभू का काम अपने बन्दों से दूर रहना है। युगों युगों तक या वर्षों तक जब प्रभू देखते हैं कि भक्त को भगवान की जरूरत है तो एक पल के लिए अपना दर्शन देते हैं। अपने भक्त को एक-दो वर देकर अपने स्थान को चले जाते हैं। वह भक्तों के पास रह ही नहीं सकते और पिया अपनी रूहों से एक पल भी जुदा नहीं रह सकते।

हमें वाणी से ही पिया की पहचान होती है। हमें वाणी मिली है पढ़ने के लिए न कि घर की शोभा के लिए। वाणी ही पिया को पहचान है। वाणी ही सरूप साहेब है। इसके पढ़ने से ही अपने कौल, फैल और हाल की पहचान होती है। दुनियां की ओर भी ध्यान दें तो पता चलता है कि पहले कहां थे अब कहां हैं। हम अपने जीवन में ही ध्यान से देखें तो पता चल जाता है कि हम पहले क्या थे और अब क्या हैं सब पिया की ही मेहरबानी है अपने साथियों के लिए तो बहुत ही आसान है न किसी की पूजा की जाती है, न किसी को मनाया जाता है और न ही किसी के रूठने का डर है। श्री जी की वाणी के सम्मुख होकर पिया के चरणों में प्रणाम करें और दुनियां के गृहस्थ की गाड़ी चलायें।

क्योंकि श्रीराज जी दुनियां के लिए परमात्मा हो सकते हैं लेकिन हमारे तो धनी हैं और यह पूजा उनके लिए है जिनका कोई एक नहीं है वो सबको पूजते हैं, सबके आगे हाथ पसारते हैं। लेकिन जिनके पिया हैं उनको हाथ पसारने की जरूरत नहीं है। पिया को अपनी इज्जत की फिकर स्वयं ही है हम उनके हो चुके हैं।

मेरे में लिखने वाली बुद्धि नहीं है और न ही मैं पढ़ी लिखी हूँ। जो मन में आता है आपको अपना जान कर लिख देती हूँ। बहुत सी गल्तियां भी होंगी अपना जानकर क्षमा कर देना।

Nijanand App